International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 135-137

हर्ष के प्रारम्भिक जीवन में पैतृक संस्कारों की भूमिका

डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर–संस्कृत, बी.एस.एन.वी.पी.जी. कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
यह सौभाग्य का विषय है कि पुष्यभूतिवंश के यशस्वी राजा हर्ष के राज्यकाल के विषय में बाणभट्ट नामक संस्कृत साहित्य के उद्भट विद्वान ने, जो उसके राजदरबार का रत्न था, अपनी लेखनी चलाई है। हर्ष के प्रति उसकी अनुरक्ति थी। हर्ष के पूर्वजों के प्रति उसके हृदय में आस्था का भाव था। उसके वर्णन में मात्र चाटुकारिता नहीं दिखाई देती। वह दूरदर्शी था। उसने प्रकृति, समाज एवं राजनीति को अत्यन्त निकट से देखा था। सटीक उपमाओं द्वारा अभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता वाले बाण के वर्णन से हर्ष के पैतृक संस्कारों पर बहुमूल्य प्रकाश पड़ता है। 'हर्षचरित' के अतिरिक्त हर्ष के मधुबन (उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में), बांसखेड़ा (उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में) तथा सोनपत (हरियाणा के सोनपत जिले के सोनपत स्थान) से प्राप्त ताम्रपत्र और लेखों तथा नालन्दा (बिहार में गया के निकट) से प्राप्त मृण्मुद्रा लेख के अनुसार 'परम भट्टारक महाराजाधिराज श्री हर्ष, पिता प्रभाकरवर्द्धन एवं माँ यशोमती के सुयोग्य पुत्र थे। ज्येष्ठमास के कृष्णपक्ष की द्वादशी को कृत्तिका नक्षत्र में रात्रि के प्रारम्भ में हर्ष का जन्म हुआ। सी० वी० वैद्य तथा कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार हर्ष का जन्म चार जून, सन् पाँच सौ नब्बे ई० को हुआ था । बाण के अनुसार हर्ष के जन्मोत्सव पर विविध मंगलाचार हुए थे। ब्राह्मणों ने वेदोच्चार किया। पुरोहित शान्तिजल लेकर उपस्थित हुए। वृद्ध सम्बन्धी एकत्रित हुए। कारागार से बन्दी मुक्त किए गए। यहाँ हर्ष के संस्कारों की झलक मिलती है जिसके अनुसार जन्म के समय से ही उसे ब्राह्मणों, कुलवृद्धों का आशीर्वाद यहाँ तक कि कृपा पाकर मुक्त किए गए बन्दी जनों की शुभकामनाएं प्राप्त हुई होंगी। इसी सन्दर्भ में बाण का यह उल्लेख विचारणीय है कि प्रसन्न हुए लोगों ने बनियों की दुकानें लूट ली।। वस्तुतः प्रसन्नता के वातावरण में भीड़ की मनोवृत्ति का यह एक सहज अंग है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल की धारणा है कि सम्भव है राज्य की ओर से बनियों की हानि को पूरा किया गया हो।

मुख्य शब्द : पैतृक संस्कार।

प्रस्तावना
बाण के हर्षचरित से हर्ष के संस्कारगत गुणों का परिचय उस समय विशेष रूप से होता है जब पिता प्रभाकरवर्द्धन मृत्यु शैय्या पर थे और हर्ष उनके पास खड़े थे। पिता ने पुत्र से कहा था– 'वत्स, तुम पितृ–प्रिय और मृदु हृदय के हो। .... मेरे सुख, राज्य, वंश, प्राण परलोक सब तुम्हीं में स्थित। जिस तरह तुम मेरे हो, उसी तरह तुम समस्त प्रजा के हो। तुम अनेक जन्मों में किए गए पुण्यों का फल। तुम्हारे लक्षण बतलाते हैं कि चारों समुद्रों का आधिपत्य तुम्हारे करतल पर होगा। मैं तुम्हारे जन्म से ही शृत–कृत्य हूँ। वस्तुतः हर्ष जैसे सुयोग्य पुत्र ने अपने माता–पिता के सद्गुणों से प्रेरणा एवं शिक्षा लेकर उनका विकास किया होगा। बचपन में बालक अपने पारिवारिक वातावरण से जाने–अनजाने में ऐसे अनेक तत्त्व ग्रहण कर लेते हैं जिनका प्रभाव उनके समग्र जीवन में प्रतिबिम्बित होता है। प्रस्तुत सन्दर्भ में गुप्त–वंशी राजा समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में उल्लिखित हरिषेण का वर्णन तुलनीय है जिसमें पिता चन्द्रगुप्त प्रथम ने प्रेमाश्रुओं से विकल होकर अपनी सुयोग्य सन्तान समुद्रगुप्त को भरी राजसभा में गले लगाकर कहा था कि तुम हर दृष्टि से योग्य हो, इस पृथ्वी का पालन करो, मैं तुम्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित करता हूँ। बाल्यावस्था में हर्ष को अपने बड़े भाई राज्यवर्द्धन तथा छोटी बहिन राज्यश्री के साथ खेलने का अवसर मिला था। हर्षचरित के अनुसार हर्ष के ममेरे भाई भण्डि को भी दोनों राजकुमारों के साथ रहने हेतु नियुक्त किया गया था। सम्भवतः यशोमती का भतीजा भण्डि भी सत्संस्कारों से संयुक्त एवं विश्वासपात्र रहा होगा। बाल्यावस्था की मित्रता का भावी जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। यही कारण है कि पिता प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु एवं भाई राज्यवर्द्धन की हत्या के बाद हर्ष को सत्परामर्श देने वाला भण्डि उसके लिए वरदान सिद्ध हुआ। हर्ष ने बचपन से ही अपनी हस्तिशाला एवं अश्वशाला की उपयोगिता देखी थी। बाण ने हर्ष के सर्वप्रिय हाथी 'दर्पशात' की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। यहाँ तक कि प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु पर दर्पशात की आँखों से अविरल अश्रु प्रवाहित हुए थे। हर्षचरित के अनुसार हर्ष की सेना में हाथियों की संख्या अनेक 'अयुत' थी (अनेकनागायुतबलम्) । एक अयुत दस हजार के बराबर होता है। ह्वेनसांग के वर्णन के अनुसार हर्ष की सेना में साठ हजार हाथी थे। सम्भवतः गुप्त साम्राज्य के बिखरने के बाद पूरे देश में छोटे–छोटे राज्यों का अस्तित्व बढ़ा जिन्होंने अपनी सुरक्षा हेतु दुर्गों का निर्माण कराया होगा। इन दुर्गों को तोड़ने में हाथी अधिक सक्षम रहे। होंगे। बाण ने हाथियों को फौलादी दीवार की संज्ञा दी है जो शत्रु की बाण वर्षा को झेल सकती थी (कृतानेक बाणविवर–सहस्रं लोहप्राकारम्) हाथियों को युद्धविद्या की समुचित शिक्षा दी जाती थी। हर्ष ने अपने पिता के समय से ही नए पकड़कर लाए हुए अथवा भेंट में प्राप्त अथवा कर रूप में प्राप्त अथवा बलपूर्वक छीने गए। हाथियों को अपनी सेना में स्थान प्राप्त करते देखा था, जिसका प्रभाव कालान्तर में भी विद्यमान रहा होगा। वातापी के चालुक्य राजा पुलिकेशन द्वितीय के विरुद्ध हुए संघर्ष में हर्ष की सेना में विशाल संख्या में श्रेष्ठ हाथी थे। 'ऐहोल लेख' के लेखक रविकीर्ति ने लिखा है कि हर्ष इस युद्ध में मारे गए अपने हाथियों को देखकर हर्षरहत हो गया था। हर्ष की अश्वसेना का अत्यन्त सुन्दर वर्णन बाण के हर्षचरित में मिलता है। बांसखेड़ा ताम्रपत्र लेख में 'हस्त्यश्वविजयस्कन्धावार' पद आया है। विविध रंगों के उत्तम कोटि के अश्व भारत के अनेक अंचलों तथा विदेशों से

मंगवाए जाते थे। लगभग चौदह–पन्द्रह वर्ष की आयु में हर्ष अपनी प्रिय अश्व सेना के साथ हिमालय की तराई में आखेट हेतु गया था। एक श्रेष्ठ राजकुमार में जिन गुणों का समावेश होना चाहिए हर्ष उनके संयुक्त रहा होगा। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार विदेशी हूण जाति बर्बर एवं आक्रामक थी। मध्य एशिया में हूणों ने अपनी बर्बरता से अनगिनत लोगों की हत्या की थी। हूणों के आक्रमण को निष्फल करना किसी भी भारतीय राजा के लिए गौरव की बात थी। स्कन्दगुप्त का नाम भारतीय इतिहास में इसी कारण स्वर्णाक्षरों में अंकित है, क्योंकि उसने हूणों के आक्रमण को निष्फल किया था। गाजीपुर जिले की सैदपुर तहसील के भितरी नामक स्थान से प्राप्त लेख से इसकी पुष्टि होती है। राजा प्रभाकरवर्द्धन को हर्षचरित में 'हूण हरिण केसरी' की संज्ञा दी गई है। हूण पराजित होने के बाद भी उत्तरापथ में अपना राज्य बनाए हुए थे। प्रभाकरवर्द्धन की शारीरिक शक्ति शिथिल होने तथा राजकुमारों के छोटे होने का लाभ उठाकर हूणों ने पुनः थानेश्वर पर अधिकार करने का प्रयास किया होगा अथवा भावी आशंका को देखते हुए प्रभाकरवर्द्धन ने अपने ज्येष्ठ पुत्र राज्यवर्द्धन को बड़ी सेना, अनुभवी मन्त्रियों एवं स्वामिभक्त सामन्तों के साथ भेजा था। हर्ष भी भाई के साथ गया था किन्तु पहले ही हिमालय की तराई में रूक गया था। राष्ट्रभक्ति की भावना उसे अपने पिता से संस्कार के रूप में प्राप्त हुई थी।

हर्ष को अपने श्रद्धेय पिता की अतिशय रूग्णावस्था की सूचना स्वामिभक्त कुरंगक से प्राप्त हुई थी। उस समय वह हिमालय की उपत्यका में आखेट में व्यस्त था। बिना विलम्ब किए वह घोड़े पर सवार होकर घर लौटा। मार्ग में उसने भोजन नहीं किया वरन् रात में भी बराबर चलता रहा। यह हृदय से पिता के प्रति उसकी श्रद्धामयी भावना का प्रतीक है। यहीं सर्वधर्मसमन्वय का एक सुन्दर दृश्य हर्षचरित में वर्णित है। राजा प्रभाकरवर्द्धन की स्वास्थ्य कामने हेतु दान–दक्षिणउा दी जा रही थी; कुल देवताओं का पूजन हो रहा था। षडाहुति होम हो रहा था महामायूरी का पाठ चल रहा था। महामायूरी बौद्धों की विद्या थी। ग्रह शान्ति का विधान चल रहा था और रक्षा के लिए बलि दी जा रही थी। संयमी ब्राह्मण संहिता–मन्त्रों का जप करने में लगे थे। शिव के मन्दिर रूद्र–एकादशी (यजुर्वेद के रुद्र सम्बन्धी ग्यारह अनुवाक) का जप बैठा हुआ था। अत्यन्त पवित्र शैव भक्त (शिव) को एक सहस्र दूध के कलशों से स्नान कराने में लगे थे। प्रस्तुत अंश से स्पष्ट है कि हर्ष को धर्मों के प्रति सहिष्णुता का भाव संस्कार के रूप में प्राप्त हुआ था।

> जीवन के अन्तिम क्षणों में पिता का हृदय पुत्र के प्रति कितना निर्मल एवं स्नेहसिक्त था; इसकी एक झलक अंशों से प्राप्त होती है– रोग की अधिकता के कारण प्रभाकरवर्द्धन बड़ी कठिनता से इतना कह पाए–

'हे वत्स, कृश जान पड़ते हो' । भण्डि ने सूचना दी कि हर्ष को भोजन किए हुए तीन दिन हो चुके हैं। प्रभाकरवर्द्धन ने गद्गद होकर रोते हुए कहा–'उठो आवश्यक क्रियाएं करो। तुम्हारे आहार करने के बाद ही मैं पथ्य लूंगा। हर्ष का तीन दिन तक पिता की अस्वस्थता से दुःखी होने के कारण भोजन न करना, उसकी पिता के प्रति गहन समर्पित भावना का प्रतीक है। इस भावना के मूल में पिता प्रभाकरवर्द्धन का सहज पुत्र मोह एवं वे संस्कार क श्रेष्ठ परिवार के लक्षण हैं। हर्षचरित में बाण ने अपने कुल के अनेक लक्षणों का निम्न प्रकार उल्लेख किया है जिनसे उस युग के सुसंस्कृत परिवार के लक्षणों पर प्रकाश पड़ता है। 'श्रौत आचारों का उन्होंने आश्रय लिया था। झूठ और दम्भ को वे पास न आने देते थे। कपट, कुटिलता बी बघारने की आदत उनमें न थी। पापों से वे बचते थे। शठता को दूर करके अपने स्वभाव को प्रसन्न रखते थे। हीनता की कोई बात नहीं आने देते थे। दूसरे की निन्दा से अपने चित्त को विमुख रखते थे। सरस में प्रीति रखने वाले, विदग्धों के अनुरूप हास–परिहास में चतुर, मिलने–जुलने में कुशल, नृत्य गीत वादित्र को अपने जीवन में स्थान देने वाले, इतिहास में अतृप्त रुचि रखने वाले, दयावान्, सत्य से निखरे हुए, साधुओ को इष्ट, सब तत्त्वों के प्रति सौहार्द और करुणा से द्रवित, रजोगुण से अस्पृष्ट, क्षमावन्त, कलाओं में दक्ष एवं अन्य सब गुणों से युक्त.वे कुल असाधारण थे। पिता के प्रति समर्पित निष्ठा की भावना का एक उदाहरण हर्ष–विरचित नाटक 'नागानन्द' के एक अंश प्राप्त होता है। इसमें नाटक के नायक जीमूतवाहन के मुख से निसृत अंश निम्न प्रकार हैं–'पिता के सामने जमीन पर बैठने में जैसी शोभा होती है, वैसी क्या राजसिंहासन पर बैठने में है? पिता के पैर दबाने में जो सुख है, वह क्या राज्य पाने में है, पिता की जूठन खाने से जो तृप्ति मिलती है, वह क्या न को पालन करने तथा भोग्य वस्तु के मिलने में है? हर्ष के सत्संस्कारों का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण उसकी मां यशोवती (यशोमती) के साथ उसके सम्वाद में मिलता है। बाण के अनुसार रानी यशोमती सधवा रूप में मरना चाहती थी और प्रभाकरवर्द्धन का अन्तिम समय सन्निकट था। ऐसी स्थिति में यशोमती अपने पति का चित्रफलक दृढ़ता से लेकर अग्नि में प्राण अर्पित करने जा रही थीं। भाई राज्यवर्द्धन युद्ध भूमि में थे, बहिन राज्यश्री ससुराल में थी। हर्ष के सामने पिता के साथ–साथ मां के वात्सल्य की छाया भी उठ रही थी। हर्ष की मनोदशा का चित्रण बाण की सूक्ष्म दृष्टियुक्त लेखनी ने निम्न प्रकार किया है–

अश्रुपूरित नेत्रों से हर्ष ने कहा– 'मां, तुम भी मुझ मन्द भाग्य को छोड़ रही हो। कृपा कर इस विचार से निवृत्त होओ।' यह कहकर मां के चरणों में गिर पड़ा । यशोमती शोक से विह्वल हो गई। उसने हर्ष को स्नेह के साथ उठाया। बेटे के आंसू पोछे और स्वयं अश्रुपूर्ण नेत्रों से हर्ष से कहा–'मैं अविधवा ही मरना चाहती हूँ, आर्यपुत्र से विरहित हो जाना नहीं चाहती। हे पुत्र, ऐसी अवस्था में मैं ही तुम्हें मनाती हूँ। मेरे मनोरथ का विरोध कर मेरी कदर्थना मत करो।' यह कहकर यशोमती हर्ष के चरणों में गिर पड़ी। हर्ष ने शीघ्र अपने पैर खींचे और झुककर मां को उठाया। असह्य शोक से सन्तप्त दृढ़निश्चयी मां की मनोदशा को देखकर वह चुप हो गया। बाण ने मां के सती हो जाने तथा पिता के दिवंगत होने के बाद हूणों को पराजित कर लौट कर आए। राज्यवर्द्धन एवं हर्ष के बीच जिस संवाद का विवरण प्रस्तुत किया है, वह राम और भरत के भ्रातृप्रेम का स्मरण दिलाता है। माता–पिता के वियोग से राज्यवर्द्धन जैसे सुयोग्य पुत्र का विचलित हो उठना स्वाभाविक ही था। राज्यवर्द्धन ने हर्ष से कहा था। जिस प्रकार पुरु ने पिता की आज्ञा से यौवन सुख छोड़कर जरा को अपनाया था, तुम मेरी राज्य चिन्ता ग्रहण करो और कृष्ण के समान सकल बालक्रीड़ाओं को छोड़कर अपना वक्ष लक्ष्मी को दो। मैंने शस्त्र का परित्याग कर दिया है। यह राज्यवर्द्धन की त्यागगत भावना का प्रतीक है। उधर राज्यभोग हेतु भाई का आदेश हर्ष को ऐसा लगा मानो उन्हें कुलकलत्र के समान व्यभिचार में लगाया जा रहा है और उन्हें ऐसा समझा जा रहा है जैसे वे पुष्यभूतिवंश में उत्पन्न नहीं, तात का पुत्र नहीं, भाई नहीं। भाई द्वारा उन्हें राज्य करने की आज्ञा देना हर्ष को दाहकारिणी अंगारवृष्टि के समान लगा था। हर्ष ने बड़े भाई को ही राजा माना था। यह भारतीय संस्कारों से सम्पन्न हर्ष के व्यक्तित्व की अनूठी विशेषता थी।

उपसंहार

वस्तुतः संस्कार वे क्रियाएं हैं जो मनुष्य को योग्यता प्रदान करती हैं। प्रस्तुत लेख में हर्ष के पैतृक संस्कारों को यथासम्भव प्रस्तुत करने का लेखक का विनम्र प्रयास है। इन्हीं संस्कारों की नींव पर हर्ष के व्यक्तित्व का अभेद्य दुर्ग निर्मित हुआ था। बाण जैसे विद्वान् एवं कुशल व्यक्ति को अपने दरबार के रत्न के रूप में आसीन करने से पूर्व प्रारम्भ में ही हर्ष ने उसके मनस्वी व्यक्तित्व की परीक्षा ली थी। संक्षेप में कहा जा सकता है कि संस्कारी महाराजाधिराज हर्ष न केवल आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व अपने काल की विभूति थे वरन् वे वर्तमान एवं भविष्य की प्रेरणा के अजस्र स्रोत हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजा हर्षवर्धन– एम.आई. राजस्वी, मनोज पब्लिकेशन, 2006।
2. हर्षवर्धन– अनिरुद्ध जोशी
3. India: History, Religion, Vision and Contribution to the World, by Alexander P. Varghese p.26
4. Ancient India by Ramesh Chandra Majumdar p.274
5. Vasudeva Sharana Agrawala. The deeds of Harsha: being a cultural study of Bāṇa's Harshacharita. Prithivi Prakashan. 1969, p. 118.